SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

orZeku lanHkZ esa Lokeh foosdkuan ds 'kSf{kd fopkjksa ,oa mins'kksa dh çklafxdrk

çhfr lkgw] शोधार्थी, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
çhfr lkgw] शोधार्थी, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

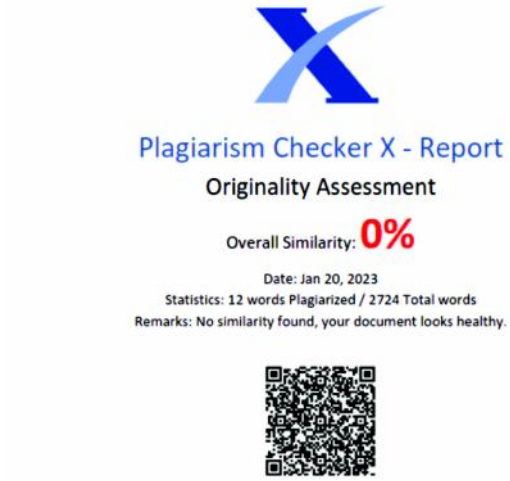

Received on : 20/01/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/01/2023
Plagiarism : 00% on 20/01/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **0%**
Date: Jan 20, 2023
Statistics: 12 words Plagiarized / 2724 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

'kks/k lkj

स्वामी विवेकानंद जी उन महान दार्शनिकों में से एक थे जिन्होंने अपने दार्शनिक विचारो को शिक्षा के नवीन विचारों के साथ समन्वित किया। दर्शन के सिद्धांतो को शिक्षा के माध्यम से व्यवहारिक रूप से प्रस्तुत किया, उन्होंने कहा "ज्ञान मनुष्य के भीतर है।" इस परीप्रेक्ष्य में शिक्षा के उद्देश्यों व लक्ष्यों पर पुनर्विचार करने की आवश्कता प्रकट होती है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत उन्नति को ही लक्ष्य माना जा रहा है और शिक्षा पाने के होड़ में युवा समाज से दूर होता जा रहा है। वह समाज, समूह व सामाजिक संस्थाओं को अपने जीवन का अंग नहीं बल्कि अपने लिए साधन मानने लगा है। इस समस्या के समाधान के लिए स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षा दृष्टि वर्तमान समय में अत्याधिक् प्रांसगिक है। यह युवाओं के चरित्र निर्माण, आध्यात्मिकता के साथ–साथ नैतिकता में भी वृद्धि करती है।इस प्रकार यह लेख स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचारों पर चर्चा करता है।

eq[; 'kCn

'kSf{kd fopkj] Lokeh foosdkuUn-

çLrkouk

पूरी पृथ्वी पर ऐसा कोई देश जिसे हम पुण्य भूमि कह सके जहाँ मनुष्यों में दया, शुद्धता, धैर्य व आध्यात्म आदि का सबसे ज्यादा विकास हुआ हो, जो युगों तक शक्तिशाली बना रहा परन्तु शक्ति कभी भी उसका उद्देश्य नहीं रहा, तो वह भूमि केवल भारत ही है।

स्वामी विवेकानंद जी ने शिक्षा को कभी भी आलौकिक रूप में स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि बालक जो कुछ भी जानता है वह उसके

भीतर ही छिपा हुआ है। बालक जो कुछ सिखाता है वह वास्तव में वह सीखता नहीं है बल्कि अपने अनंत ज्ञान–स्वरूप आत्मा के उपर से आवरण को हटा लेना ही है, अर्थात् विश्व का सारा ज्ञान चाहे व लौकिक हो या अलौकिक, व्यवहारिक हो या पारमार्थिक बालक के मन में ही निहित है। हम शक्तियों को जितना अधिक विकसित करते है बालक उतना ही अधिक शिक्षित होता है। स्वामी जी पुस्तकीय ज्ञान को शिक्षा नहीं मानते थे। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षा का सार "तथ्यों का संकलन नहीं, बल्कि मन की एकाग्रता प्राप्त करना है," जिसके माध्यम से बालक अपने अंर्तनिहित विचारो पर नियंत्रण कर सके साथ ही चरित्र का निर्माण कर सके। स्वामी जी के अनुसार, सौंदर्यशास्त्र या ललित कला के शिक्षण के बिना शिक्षा अधूरी है। उनका मानना था कि जीवन को इस प्रकार जीना चाहिए कि बालक अपने सत्य, व्यवहार की अच्छाई, सुंदरता को अपने विचारों, कर्मों व शब्दों में ला सके।

स्वामी विवेकानन्द जी पश्चिमी देशों की समृद्धि से प्रभावित तो बहुत थे परन्तु उन्होंने यह भी देखा की भौतिक समृद्धि उनके नैतिक विचारों को खोखला कर दिया था इसलिए वे चाहते थे की भारत भी वैसी ही समृद्धि प्राप्त करे लेकिन उनके नैतिक व आध्यात्मिक आदर्शों के प्रति लगाव बना रहे। वे कहते हैं, कि "उद्धरेत् आत्मना आत्मानम" –अपने प्रयासों से अपना उद्धार करो। इसके लिए हमें तकनीकी शिक्षा और आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता है जो उद्योगो को विकसित कर सकें, जो किसानों व श्रमिकों को उनकी दशा का बोध करा सके तथा उनकी उन्नति की आवश्यकता को समझा सके व उनकी सहायता कर सके। उनका कहना है कि एक समृद्ध राष्ट्र के विकास के लिए हमें विकसित देशो की गतिशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपने देश की आध्यात्मिकता के साथ जोड़ना होगा साथ ही संपूर्ण शैक्षिक गतिविधि को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि यह युवाओं को देश की भौतिक प्रगति में योगदान करने के साथ–साथ भारत की आध्यात्मिक विरासत के सर्वोच्च मूल्य को बनाए रखने के लिए तैयार करे।

orZeku f'k{kk dh vkykspukRed leh{kk

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार वर्तामान में जो शिक्षा हमें प्राप्त हो रही है उनमे बहुत सी खूबियाँ है लेकिन इसमे जबरदस्त कमियाँ है जो शिक्षा की अच्छी खूबियों पर हावी हो जाती है। आधुनिक शिक्षा जो रोजगार उन्मुख है वह स्वानुशासन, नैतिकता, सकरात्मक इच्छा,व चरित्र निर्माण की परवाह नाम मात्र की ही करती है। यह शिक्षा आत्म–नियंत्रण, सत्य, ईमानदारी, करुणा व लोगों से सामंजस्य स्थापित करना नहीं सिखाता है। यह नहीं सिखाता कि कठिन परिस्थितियों का सामना कैसे करें, तनाव कम कैसे करें, मन शांत कैसे रखे व परम आनन्द का अनुभव कैसे करे, हिंसा में लिप्त होना, छात्रों द्वारा आत्महत्या करने के मामलो में वृद्धि यह दर्शाता है कि वे नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ है। यह युवाओं को स्वनियोजन, आत्म–साक्षात्कार और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से सज्जन, मानस, साहसी, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर और मूल्यों, नैतिकता, सत्यनिष्ठा और सहानुभूति पूर्ण मानव बनने में मदद नहीं करता है जैसा कि पारंपरिक प्रणाली में था। उच्च शिक्षा या योग्यता का क्या फायदा अगर कोई डॉक्टर, शिक्षक, इंजीनियर, वैज्ञानिक, टेक्नोक्रेट या कोई अन्य अपने माता–पिता का सम्मान न कर सके और उन्हें जीवन के अंतिम पड़ाव वृद्धाश्रम में बिताने के लिए छोड़ देता है। भारत में सामाजिक बुराइयों जैसे गरीबी, निरक्षरता, भय, शारीरिक कमजोरी, जाति और अस्पृश्यता, लोभ, शोषण, स्वयं पर विश्वास की कमी और हिंसा, सामूहिक उत्पीड़न, धर्म की विकृति, भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि की लगातार वृद्धि दर आधुनिकता की असफलता को बहुत ही अच्छे से दर्शाता है।

आम जनता की उपेक्षा, जनता पर अत्याचार, धर्म के नाम पर जन शोषण, आलस्य और नीचता, संकीर्णता, संगठन का अभाव नारी की अवहेलना आदि हमारे राष्ट्रीय पतन के मुख्य कारण हैं। इक्कीसवीं सदी में अखंडता, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और लोकतंत्र को विकसित करने व राष्ट्र विकास को सुनिश्चित व पुनर्जीवित करने हेतु स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा दर्शन, शिक्षा प्रणाली व वेदान्त शिक्षा सक्षम हैं।

Lokeh foosdkuUn th dk nk'kZfud vk/kkj

स्वामी विवेकानन्द जी आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकतावादी होने के साथ ही वे वेदों उपनिषदों के

ज्ञाता भी थे। स्वामी जी वेदान्त दर्शन व नव्य वेदांत के समर्थक है व इसकी छाप उनके जीवन व शैक्षिक दर्शन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा "जहाँ तक बंगाल का सम्बन्ध है हम विवेकानंद को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कह सकते है।" सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि विवेकानंद में बुद्ध का हृदय और शंकराचार्य की बुद्धि थी।

प्रकृतिवादी दृष्टिकोण में उन्होंने वास्तविक शिक्षा पर बल दिया उनके अनुसार प्रकृति और प्राकृतिक प्रवृतियों के माध्यम से ही संभव है। आदर्शवादी दृष्टिकोण में शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को नैतिक व आध्यात्मिक गुणों के साथ विकसित करना है। व्यावहारिकतावादी दृष्टिकोण में उन्होंने तकनीकि, वाणिज्य, उद्योग व विज्ञान आदि की शिक्षा पर जोर दिया।

f'k{kk ij Lokeh foosdkuUn dh vo/kkj.kk

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा वह है जो मुक्त कराती है (सा विद्या या विमुक्तये)। यह मानव को अपने वास्तविक 'स्व' के बारे में नकारात्मक प्रवृतियों और अज्ञानता से मुक्त करता है। सम्पूर्ण जीवन में अमरता प्राप्त करने हेतु सांसारिक और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों की प्राप्ति पर जोर दिया। इस तरह सीखना अंत नहीं बल्कि मानव में आत्म चेतना विकसित करने में सहायता करने का साधन है।

"जिस संयम के द्वारा इच्छा शाक्ति का प्रवाह तथा विकास को वश में लाया जाता है और फलदायी होता है, उसे शिक्षा कहते है।" क्या वह शिक्षा है, जो मानव को धीरे–धीरे मशीन में परिवर्तित कर रही है? इसका जवाब देते हुए स्वामी जी ने कहा – जो स्वचालित यंत्र के सामान अच्छे कर्म करता है उसकी अपेक्षा अपनी स्वतंत्र इच्छा शक्ति से अनुचित कर्म करने वाले को श्रेष्ट माना है।

शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि तुम्हारे दिमाग में बहुत से तथ्य ठूस दिए जाये कि उनमें होने वाले द्वंद को तुम्हारा दिमाग पचा ही न पाए। जिस शिक्षा से मानव अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सकें, चरित्र निर्माण कर सके और जो विचारों व व्यक्ति में सामंजस्य स्थापित कर सके वही वास्तविक रुप में शिक्षा कहलाने योग्य है।

f'k{kk dk mís';

vUrfuZfgr iw.kZrk dh vfHkO;fä% स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना है। उनके अनुसार सारा ज्ञान – व्यवहारिक और आध्यात्मिक सभी मानव के मन में पहले से ही विद्मान है। बस यह प्रकट न होकर ढँका रहता है जिस मानव के ज्ञान का आवरण हट जाता है वह सर्वज्ञ पुरुष कहलाता है। शिक्षा मानव को इसी सर्वज्ञ प्राप्ति की ओर ले जाती है।

'kkjhfjd o ekufld fodkl dk mís';% स्वामी जी ने मानव विकास के लिए शारीरिक व मानसिक विकास को महत्वपूर्ण माना। शारीरिक विकास से बालक निडर व साहसी बने राष्ट्रीय निर्माण में सहयोग करे। मानसिक विकास पर बल देते हुए स्वामी जी ने कहा शिक्षा ऐसी हो जो बालक को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करे व बालक अपने पैरो पर खड़े हो सके।

pfj= dk fuekZ.k% स्वामी जी का मानना था कि आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के द्वारा मानव को महान बनाया जा सकता है। उनका कहना था कि "आत्म–प्रदर्शन, दलबंदी तथा इर्ष्या को सदा के लिए त्याग दो। पृथ्वी की तरह सब कुछ सहन करने की शक्ति अर्जित करों।"

ekuo fuekZ.k djuk% स्वामी जी ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव निर्माण को माना। उन्होंने कहा है " शिक्षा द्वारा ही मानव का निर्माण किया जा सकता है।" सभी विषयों के अध्ययन का एक मात्र उद्देश्य मनुष्य का विकास करना है।

jk"Vªh;rk dh Hkkouk dk fodkl% विवेकानंद जी भारत की दशा से अत्यंत चिंतित थे। वे एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना चाहते थे जो बालको में राष्ट्र प्रेम व भक्ति का विकास कर सके। उन्होंने नव युवको से कहा – देश भक्त बनो, जिस राष्ट्र ने अतीत में हमारे लिए इतने बड़े–बड़े काम किए है, उसे प्राणों से भी प्यारा

समझों और सम्मान करों।

ikBîØe% स्वामी विवेकानन्द जी पाठ्यक्रम के विषय पर चर्चा करते हुए कहा करते थे कि कैसे व कितना पढ़ना है इस प्रश्न से ज्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है की क्या पढाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम ऐसा हो जो शिक्षा के सभी उद्देश्यों को अपने में समाहित किए हुए हो। उन्होंने पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया:

अ. ykSfdd ikBîØe% भाषा, विज्ञान, सा. विज्ञान, कृषि, उद्योग कौशल, कला, राष्ट्र–सेवा एवं खेल–कूद के साथ सभी आधुनिक शिक्षा पर बल दिया।

ब. vk/;kfRed ikBîØe% धर्म, दर्शन, पुराण, उपदेश एवं भजन गीत व कीर्तन आदि को सम्मिलित किया।

f'k{k.k i)fr% स्वामी जी ने ध्यान एकाग्रता को ही शिक्षा का मूल मंत्र माना। कोई भी ज्ञान इसके बिना अर्जित नहीं किया जा सकता है। जितना अधिक ध्यान उतना अधिक ज्ञान प्राप्त होता है। इसके अलावा भी कुछ मुख्य पद्धतियां इस प्रकार है:

- धर्म या योग विधि
- अनुकरण विधि
- परिचर्चा विधि
- व्याख्यान विधि
- अनुभव द्वारा सीखना

f'k{kd dk drZO;% स्वामी जी का मानना था कि किसी भी व्यक्ति को कुछ नहीं सीखाया जा सकता है। सब उनके भीतर पहले से ही विद्यमान होता है। शिक्षक का कार्य केवल बालक में विद्यमान शक्तियों के लिए उचित वातावरण तैयार करना है। शिक्षक शास्त्रों का ज्ञाता, बाल मनोवैज्ञानिक व पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है। स्वामी जी के अनुसार "शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र व मार्गदर्शक है।"

Nk= dk nkf;Ro% छात्र का कर्तव्य अपने अंदर निहित शक्तियों को बहार निकलना। इसके लिए उनको अपने अन्दर ध्यान, एकाग्रता, श्रम व निष्ठां को जागृत करना होगा। उन्होंने बालको से कहा है जब तक तुम्हारी अंतरात्मा नहीं खुलेगी बाह्य शिक्षण व्यर्थ है। तुम विश्व की सबसे श्रेष्ठ पुस्तक हो जो कभी थी अथवा होगी।

ukjh f'k{kk% स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर जोर देते हुए कहा "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे बताएगी की उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक है, उनके मामलों में बोलने वाले तुम कौन होते हो।" हमारा समाज नर–नारी दोनों से मिलकर बना है इसलिए दोनों की सामान शिक्षा से ही देश का सम्पूर्ण विकास संभव है।

Lokeh foosdkuan ds egRoiw.kZ mins'k

स्वामी विवेकानंद जी एक महान दार्शनिक होने के साथ–साथ महान समाज सुधारक भी थे। विवेकानंद का मानना था कि हिंदू धर्म का सार वेदांत दर्शन में अव्यक्त था जो आदि शंकर की व्याख्या पर आधारित था। स्वामी जी ने कहा था "मैं धर्म को शिक्षा का अन्तरतम अंग समझता हूँ।" सबका केंद्र धर्म है, धर्म ही भोजन में भात के सामान है बाकि सभी सब्जी व चटनी के सामान है।

स्वामी जी नकरात्मक नहीं, सकारात्मक शिक्षा पर बल दिया। वे बालको के सामने सकारात्मक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते थे। उनमे रचनात्मक भाव का विकास करने का प्रयत्न करना होगा, वर्तमान में बालक भाषा, साहित्य, दर्शन, कविता, शिल्प आदि कई क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है, ऐसे में कुछ गलतियाँ होना स्वाभाविक है उन गलतियों को न बताकर, उन्हें प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने में सहायता करें इसलिए उन्होंने कहा "उठो, जागो और जब तक मंजिल तक न पहुँच जाओ, रुको मत।" आज हमें आवश्कता है वेदान्तयुक्त पाश्चात्य विज्ञान की ब्रह्मचर्य के आदर्शों और श्रद्धा तथा आत्मविश्वास की।

विवेकानन्द जी ने कहा है "अपने इतिहास को जानो" अतीत ही भविष्य का निर्माता है। कुछ कहते है की सदा अतीत को देखने के कारण मानव दुःख भोगता है, पर मेरा मानना है सत्य इसके विपरीत है। जब हम अतीत की

ओर दृष्टि डालते है तो पुनर्जीवित के लक्षण दिखाई देते है। "अतीत के ढांचे में भविष्य को ढालना होगा, अतीत से ही भविष्य निर्मित होगा।"

पड़ोसी देशों के साथ विनिमय आवश्यक है क्योकि आदान– प्रदान ही संसार का नियम है। स्वामी जी का मानना था कि अगर भारत को फिर से ऊपर उठाना चाहता है तो अपने बहुमूल्य रत्नों को विश्व में बिखेर दे, और उसके बदले में जो कुछ प्राप्त हो उसे खुशी से ग्रहण करे। विवेकानन्द जी के अनुसार "विस्तार ही जीवन है और संकोच मृत्यु य प्रेम ही जीवन है और द्वेष ही मृत्यु।"

विवेकानन्द जी के अनुसार हमारे देश का राष्ट्रीय मूलमंत्र ''त्याग और सेवा'' है। इसकी बहाव में तीव्रता लाने पर बाकि सब अपने आप ठीक हो जायेगा।

स्वामी जी आत्म–विश्वास और आत्म– श्रद्धा पर बहुत अधिक विश्वास करते थे। उनका मानना था की हमें ईश्वर में विश्वास करने से पहले, खुद पर विश्वास करना चाहिए। परन्तु चिंता का विषय यह है की हमारा स्वयं पर से विश्वास कम होता जा रहा है। श्रद्धा ही एक व्यक्ति को दुसरे व्यक्ति से बड़ा और छोटा बनाती है। विवेकानन्द जी के अनुसार "जो अपने को दुर्बल सोचता है, वह दुर्बल हो ही जाता है।"

fu"d"k

स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक है। उनकी विचारों ने स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली पर अपना अमिट छाप छोड़ा है। उन्होंने शिक्षा का केवल सैद्यांतिक रूप को ही नहीं व्यवाहारिक रूप को भी महत्व दिया जो मानव को मानव बनने में सहायता करता है। वेदान्त के सिद्धांतो के व्यवहारिक प्रयोग से चरित्र निर्माण संभव है जो राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक सदभावना, शांति को बनाये रखने व विकसित करने में दिशा प्रदान करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के जो मूल्य व उद्देश्य है, उन्हें प्राप्त करने व उनकी ओर अग्रसर होने में सहायक है। इस तरह हम कह सकते है की स्वामी विवेकानंद जी की शैक्षिक दृष्टिकोण आज भी प्रासांगिक है और भविष्य में भी रहेगी।

lUnHkZ lwph

1. कुमार मुकेश, (2019). स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारो की मौलिकता, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च,* वाल्यूम.4य पेज न. 103–105 आई.एस.एस.एन. –2455–4588.
2. झा प्रभाकर, (2020). स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवादः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, *नेशनल जनर्ल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डवलपमेंट,* वाल्यूम.5य पेज न.19–22 आई.एस.एस.एन.– 2455–9040.
3. http://ignited-in/I/a/221680
4. झा मधु कान्त. (2015). स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* वाल्यूम.6य पेज न. 67–70 आई.एस.एस.एन.– 2394–5869. http://doi-org/10-22271/allresearch-2016-v2-ila-7478-
5. पाण्डेय आर. (2008). *विश्व के श्रेष्ट शिक्षाशास्त्री,* अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
6. दहिया गीता, (2017), स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक एवं सामाजिक चिंतन की वर्तमान परिपेक्ष्य में सार्थकता, वाल्यूम. 6, पेज न. 1219–1222, आई.एस.एस.एन. – 2455–4197.
7. मीना पिंकी, (2019). स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा दृष्टि और वर्तमान में प्रासंगिकता, *चेतना पियर रिव्यू,* वाल्यूम.3, पेज न. 57–61.

8. लाल रमन बिहारी, (2017). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय* आधार, पृ. 323–337, आर.लाल पब्लिकेशन.
9. शर्मा आर.ए., (2011). *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार,* आर.लाल पब्लिकेशन पृ.520।
10. स्वामी विवेकानन्द, (2017). *मेरा भारत अमर भारत,* रामकृष्ण मठ, नागपुर।
11. सक्सेना एन.आर.ए., (2010). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* साहित्य प्रकाशन आगरा पृ.349।

****